



## हिमाचली कहावतों में वर्णित जीवन अनुभव

डॉ० अनुपाल भारद्वाज

असिस्टेंट प्रोफेसर, डी० ए० वी० महाविद्यालय, अबोहर, पंजाब, भारत।

### सारांश

भाषा संस्कृति का अभिन्न अंग है। इसी संदर्भ में हिमाचल प्रदेश दोनों ही पक्षों से समृद्ध है। अधिकतर जनसंख्या अभी भी ग्रामों में बसती है। दैनिक क्रियाकलापों में कहावतों का प्रयोग सदियों से होता आया है। ये कहावतें अनुभव पर आधारित होती हैं। समय और संदर्भ के अनुसार इसका प्रयोग लोगों के अनुभव को दर्शाता है। अपने मत की पुष्टि या किसी की गलती बताने, शिक्षा देने आदि में इनका प्रयोग कारगर सिद्ध होता है। इनसे सामने वाला व्यक्ति निरुत्तर हो जाता है जो कि कहावतों का प्रयोग करने वालों की भाषिक क्षमता को सिद्ध करती है। ऐसी ही कुछ हिमाचली कहावतों का परिचय इस आलेख में दिया गया है।

**मूल शब्द :** हिमाचली कहावतें, भाषिक क्षमता, भाषा संस्कृति।

### प्रस्तावना

भाषा भावों की संवाहिका है। भाषा के माध्यम से मनुष्य ने सुदीर्घ परम्परा का निर्वहन किया है। भाषा का शब्द भण्डार जितना समृद्ध होगा, भाषा उतनी ही लोकप्रिय होगी। भाषा की दृष्टि से भारत समृद्ध है। यहां कई भाषाएं, बोलियां, प्रचलित हैं – “चार कोस पर बदले पानी, आठ कोस पर बानी”। भाषा को प्रभावशाली बनाने में कई तरह के तत्व कार्य करते हैं। इसके अंतर्गत कहावतों, लोकोक्तियों का भी बड़ा महत्त्व है। यह एक संचित ज्ञान है जिसके माध्यम से जनता की चितवृत्तियां और जाति-विशेष के गुण-अवगुण, जन जीवन का चित्र उपस्थित किया जा सकता है। भारतीय लोक साहित्य कोश के अनुसार—‘लोकोक्तियां स्वनिर्मित नीतिशास्त्र है। यह लोकमानस के दीर्घ अनुभवों का संचित कोष है जिसमें इतिहास, परम्परा और संस्कृति निरन्तर कुछ न कुछ जोड़ती रहती है। दैनिक जीवन के अनुभवों का निचोड़ जब कम से कम शब्द और सार्थक कथन का रूप ले लेता है तब लोकोक्तियों और कहावतों का जन्म होता है।’

डिक्शनरी ऑफ लिटरेरी टर्म्स के अनुसार – “Proverb. A short pithy saying which embodies related in form and content to the maxim and the aphorism. Common to most nations and peoples, it is a form of expression of great antiquity.”<sup>2</sup>

लोकोक्तियां, कहावतें ज्ञान हैं। जीवन सत्यों को इसके माध्यम से उजागर किया जा सकता है। इसका कोई लेखक नहीं होता, पीढ़ी दर पीढ़ी ये हस्तांतरित होती है। बड़े, बजुर्गों के पास कहावतों, मुहावरों, लोकोक्तियों, कथाओं का भण्डार होता है। पथ-पथ पर बच्चों को, युवाओं को संदर्भ अनुसार लोकोक्तियों, कहावतों के माध्यम से शिक्षा प्रदान करते थे। वे अधिक शिक्षित नहीं थे परन्तु जीवन के अनुभवों में वे अपनी युवा पीढ़ी से कहीं अधिक पारंगत थे। कहावत भी है—“पढ़ने से ज्यादा कढ़ना जरूरी” है। कहावतों, लोकोक्तियों में सभी तरह के पक्षों को समेट लिया जाता है सम्बन्ध, रीति-रिवाज, अहंकार कुसंगति, निर्लज्जता, आलस्य, अकर्मण्यता, समय का मूल्य न पहचानना, आदर्श, मर्यादित आचरण की शिक्षा देना, स्वार्थ लोलुपता आदि। समय और संदर्भ के अनुसार इनका प्रयोग किया जाता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक परम्परा में कहावतों का विशेष स्थान है। भारत ग्राम्य संस्कृति का देश है। हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति बहुत समृद्ध है। आधुनिक जीवन की चकाचौंध में भी हिमाचल की लोक संस्कृति, परम्पराएं अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। हरिराम जसटा के अनुसार – “यदि हिमाचली लोक संस्कृति की सम्पूर्ण कहानी देखनी है, इसका व्यवहारिक रूप देखना है तो वह पहाड़ी लोगों के जनजीवन और इतिहास में उपलब्ध होगा विशेषकर यहां के श्रेष्ठ लोक गीतों, लोकनृत्यों, मिथकों, पौराणिक कथाओं, चित्रकला, वस्तुकला, लोकोक्तियों, कहावतों, लोककथाओं, लोकविश्वासों, लोक परम्पराओं, रीति-रिवाजों, प्राचीन स्मृतियों में।”<sup>3</sup>

हिमाचल प्रदेश की कुल जनसंख्या का लगभग 90%, 20000 ग्रामों में बसता है। प्रदेश की मुख्य संस्कृति ग्राम्य संस्कृति है। ग्रामीण जीवन में दैनिक जीवन में कहावतों, लोकोक्तियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न पक्षों पर ये प्रचलित हैं। कुछ हिमाचली कहावतों का परिचय यहां दिया गया है।

1. चूहे दी शू शड़क  
बिल्लिया दी इको ही मत्त

चंचल स्वभाव वाला हानि उठाता है। लक्ष्य की ओर केंद्रित व्यक्ति चुपचाप इसकी ओर बढ़ता जाता है। स्वभाव में ठहराव होना अति आवश्यक है।

2. भुक्खे दी धी रज्जी  
खेह उडाणे लग्गी

जब किसी व्यक्ति के पास आवश्यकता से अधिक वस्तु, धन आ जाता है तो वो उसका दुरुपयोग करने लग पड़ता है। वस्तु की अधिकता से उसका महत्त्व कम हो जाता है।

3. चलदेआं कने वण भजदे  
छाही जो लोकां दे जांदे

<sup>1</sup> भारतीय लोक साहित्य कोश, खण्ड-1 सं. सुरेश गौतम (दिल्ली: संजय प्रकाशन 2003), पृ. 186

<sup>2</sup> डिक्शनरी ऑफ लिटरेरी टर्म्स, जोसेफ टी.शिपले-टोरावा: लिटल फील्ड एण्ड कम्पनी 1997), पृ.537

<sup>3</sup> हरिराम जसटा, हिमाचल की लोक संस्कृति, (दिल्ली : सन्मार्ग प्रकाशन, 1986), पृ.29

अपने आप सब कुछ होते हुए भी कुछ लोग यही रोना रोते रहते हैं कि उनके पास कुछ नहीं। सक्षम होते हुए भी दूसरों पर निर्भर रहते हैं।

4. जुलाहया करे नली-नली  
खुदा करे परकाले

भगवान को याद रखना चाहिए। सांसारिक कार्यों में पड़कर उसे भूलना मनुष्य की गलती है। कब, क्या हो जाए इसका पता केवल भगवान ही जानता है।

5. हड्डों खुड्डों रही  
राम जपण बही

जब व्यक्ति शारीरिक रूप से सक्षम होता है वह स्वयं को भगवान समझता है। जब शारीरिक बल खत्म होता है तब उसे भगवान की याद आने लगती है। यह मनुष्य का स्वभाव है।

6. रिनदी खावां पकांदी खावां  
फिरी घर देयां ने अध्ध वंडावां

अपना हिस्सा/भाग ले लेने के पश्चात् भी दूसरे के हिस्से पर आंख रखना।

7. घर दे चाल चलण चलाणे  
खोल परांदे बंधन पाणे

गृहस्थी को चलाने के लिए कई प्रकार का त्याग करना पड़ता है। घर की जिम्मेदारियों के लिए समझदार बनना पड़ता है। स्वभाव में ठहराव लाना पड़ता है। सोच में आदत में परिवर्तन लाने से ही गृहस्थी चल सकती है।

8. दूर जाइए तां वियोगे मरीये  
नेड़े आइए तां साड़े सड़ीये

यह मनुष्य की प्रकृति है किसी इन्सान के दूर जाने पर ही उसके महत्त्व का अनुभव होता है। पास रहने पर उसकी परवाह कम हो जाती है।

9. गां नीं बच्छी,  
निंद आवे अच्छी

जिसके सिर पर कोई जिम्मेदारी नहीं, वह तनाव रहित जिंदगी जीता है।

10. तालीया जो करना कुत्तु कुत्तु  
तालीया जो अपी करी लैणा बुत्तु

अपना काम स्वयं करना श्रेयस्कर है। दूसरों पर निर्भर रहने से काम का होना या न होना निश्चित नहीं है।

11. घियो सट्टे, दुध अट्टे

दूध का असर शरीर पर देसी घी की अपेक्षा जल्दी पड़ता है। इसीलिए बच्चों को दूध पीने के लिए कहा जाता है। दूध स्वयं में एक संपूर्ण आहार माना गया है।

12. मुंह मकोडुआं दे, पेट घोडुआं दे

किसी के आकार को देखकर उसकी क्षमता का आंकलन नहीं करना चाहिए।

13. मिट्ठी सीरी, मुल्ख जगीरी

मीठे वचन बोलने से ही व्यक्ति को संसार में आदर मिल सकता है। व्यक्ति को मृदु भाषी होना चाहिए।

14. पंजां पा दियां, पंज पकावां  
ढाई सेरां दीआं इक  
इनी जवान मरन्दे, पंजे खाई लियां  
मैं वचारिए इक

दूसरों की अपेक्षा अपने आप को भोला बताना। किसी व्यक्ति अधिक चतुर है जबकि मैं सीधा सादा हूँ।

15. जैसे माए वैसे जाए

माता पिता का प्रभाव बच्चों पर पड़ना स्वाभाविक है। घर को माहौल बच्चों के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालता है।

16. पहले बेटड़ा फिर पेटड़ा

मां बनने के पश्चात् कुछ महीने स्त्री को बच्चे को ध्यान में रखकर खाना-पीना होता है। जैसा मां खाएगी वैसा प्रभाव बच्चे पर पड़ता है। स्वाद की अपेक्षा स्वास्थ्य वर्द्धक वस्तुओं को प्राथमिकता देनी चाहिए।

17. माघ महीना गलांदा  
नरेड-नरुड अऊं करदा  
फग्गण गलांदा, धक्का अऊं दिंदा  
चैत गलांदा, पूछटीआ मेरे तक छूहा  
जाणें अऊं वी नहीं दिंदा

मौसम के प्रभाव का वर्णन इसमें किया गया है। लोग सर्दियों के चरम में तो अपना बचाव कर लेते हैं जैसे-जैसे सर्दियां कम होती हैं लोग थोड़े से बेपरवाह हो जाते हैं और इसी समय सबसे ज्यादा गले नाक के रोग के शिकार होते हैं।

18. अऊं चली शहर,  
आउणा होणा मेरा दूर पहर  
एह सोदु रखिया कूणीया  
अऊं चंदरा तेरे ते दूणीया

जो लोग अपने आपको ज्यादा चालाक समझते हैं उनका सामना कई बार अपने से ज्यादा चालाक लोगों से हो जाता है।

19. दौड़े-दौड़े जाइए  
जो करमे होए सैं खाइए

मेहनत के साथ-साथ किस्मत/भाग्य का होना भी जरूरी है।

20. अट्ट रोटियां हल खांदी  
नौ रोटियां खांदी कही  
इक रोटी सैं खाए  
जिहड़ा दुकानां रहे बही

अधिक परिश्रम करने वाला ज्यादा खाना खाएगा तो उसके लिए

अच्छा होगा जबकि जिसका काम बैठकर करने वाला है उसे कम ही खाना चाहिए।

21. धीया दे खरचे गिणीए  
जवाईया जो काठ मारिए

लड़की वाले अपनी लड़की की ज्यादा परवाह करते हैं दामाद का महत्त्व कम है।

22. दाल भत तुम्हारा  
आदर हमारा

यह हास्य-विनोद में कहा जाता है। सम्मान हम करेंगे बाकी सब आप स्वयं प्रबंध कर लेना।

23. होछे जो दित्ता गोछा  
तिनि फाड़ी छड़डया

अयोग्य व्यक्ति कभी भी किसी जिम्मेदारी को अच्छी तरह नहीं निभाएगा। उल्टा नुक्सान ही करेगा।

24. अग्गी दे मारू दे  
गार ही गुलणे

जब कोई व्यक्ति किसी को सताता है, अत्याचार करता है तो उस व्यक्ति के मुँह से शोषक के लिए कड़वे बोल ही निकलेंगे।

25. वड़डा टिक्का, छोटा पियारा  
गबले दा कुदियाड़ा

मंझला बच्चा अपने आप को उपेक्षित समझता बड़ा और छोटा बच्चे का महत्त्व उसके अनुसार अधिक हो जाता है।

26. बल्ले ओ, करमां दे बलीया  
पीहणा था आटा, बणी गया दलिया

जब सोचा कुछ और जाता है और हो कुछ और जाता है तो ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है।

27. भेडे तेरे मूहां गेडे

इन्सान द्वारा किए गए कर्म का परिणाम उसके सामने आ ही जाता है।

28. घर लगया राजे रसालुआ दा  
कने सिरा खलारे छज्जी

परिश्रम किसी ने किया, धन ,समय किसी ने लगाया जबकि श्रेय कोई और लेने का प्रयास करे।

29. जां तां लंगड़ा नच्चै ना  
जे नच्चे तां खोले पाई दै

प्या तो कोई व्यक्ति बोलता नहीं अगर बोले तो फिर आर-पार कर देता है। सही-गलत का अनुमान नहीं लगता।

#### समग्रत

दैनिक जीवन में हिमाचली कहावतों का प्रयोग अब कम होता जा

रहा है। युवा पीढ़ी ज्ञान, तकनीक के जाल में ऐसी उलझती जा रही है कि उनका किसी भी भाषा पर अधिकार नहीं रहा। अपनी अभिव्यक्ति के लिए उनके पास शब्द ही नहीं है। इस पतन को रोकने का प्रयास बुद्धिजीवी वर्ग को करना चाहिए। हिमाचली कहावतें जीवन के अनुभव को कुशलता से बताती हैं। पुरानी पीढ़ी इसका प्रयोग प्रचुरता से करती थी परन्तु आज ऐसा प्रयोग कम देखने को मिलता है। ऐसी कहावतें हिमाचली संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। इसको अधिक से अधिक लिखित रूप में सहेज कर रखना चाहिए। ऐसा आज के समय में अपेक्षित और आवश्यक है। प्रस्तुत आलेख इस दिशा में एक तुच्छ प्रयास है। आशा है इससे भाषा को प्यार करने वाले लाभान्वित और प्रेरित होंगे।

#### संदर्भ

1. डिक्शनरी ऑफ लिटरेरी टर्म्स, जोसेफ टी.शिपले-टोरावा: लिटल फील्ड एण्ड कम्पनी 1997),
2. भारतीय लोक साहित्य कोश, खण्ड-1 सं. सुरेश गौतम (दिल्ली: संजय प्रकाशन 2003),
3. हरिराम जसटा, हिमाचल की लोक संस्कृति, (दिल्ली : सन्मार्ग प्रकाशन, 1986)